National e-Conference

On

"The Impact of Digitization on Education and Educational Policies, Social Media, Human Behavior and Social Interaction during COVID-19"

On

14 – 15 July, 2020

Organized by

Dr. L. D. Balkhande College of Arts and Commerce
Pauni, Dist. Bhandara

Editor

Dr. Anil Kosamkar
Organizing Secretary

Patrons

Dr. Deepa M. Balkhande, President, Pravarsen Shikshan Sanstha, Nagpur
Mr. Milind L. Balkhande, Secretary, Pravarsen Shikshan Sanstha, Nagpur

Principal

Dr. Jaykishan Santoshi

Organizing Secretary

Dr. Anil Kosamkar
Head
Department of Sociology
Dr. L. D. Balkhande College of Arts and Commerce
Pauni, Bhandara.
anilkosamkar496@gmail.com
M-7507929777

Convener

Mr. Sanjay Nandagawli
IQAC Coordinator,
Associate Professor,
Head Department of English
Dr. L. D. Balkhande College of Arts and Commerce
Pauni, Bhandara.

The Conference Proceedings is Published by
Sankalp Publication
Vidyanagar Nagpur
M-8600848950

ISBN: 978-81-946103-6-6

Sr.No.	Name of the paper	Author	Page No.
27	Effect of COVID-19 on the Indian Economy and Supply Chain	Dr. Sudhir Godghate	134
28	Impact of COVID – 19 On Unemployment and Digital Era: A Study	Prof. Santosh Sahu	143
29	Impact of COVID-19 On Banking sector and Digital Era: A study	Dr. Gajanan Babde	151
30	Impact of COVID-19 on Economical Perspective in Digital Era: A study	Dr. Vijay R. Bagde	160
31	Psychological problems in Digital era	Pruthviraj D. Khobragade	166
32	आधुनिक विश्व में मानसिक स्वास्थ्य समस्या, चुनौतियाँ और समाधान	डॉ. दीपा बलखंडे	172
33	बेरोजगार और प्रवासी समस्या	श्रीमती अंजु ए. शरण	180
34	वैश्विकीकरण में संगीत शिक्षा की नयी टेक्नोलॉजी	प्रा. डॉ. अस्मिता नानोटी	185
35	कोरोना काल में हिन्दी साहित्य पर प्रभाव	डॉ. स्वर्नलता वागडे	190
36	ग्रामीण महिला एवं मिडिया	डॉ. विजय शंकरराव दिघोरे	195
37	कोविड–१९ और बेरोजगारी	डॉ. प्रदीप एच. गजभिये	200
38	कोविड १९ के परिणामस्वरूप भारतीय शास्त्रीय संगीत के सांगीतिक पक्षों में पड़ रहे प्रभाव	प्रा. डॉ. श्वेता दीपक वेगड	203
39	भारतीय अर्थव्यवस्था : रोजगार आणि स्थलांतर	डॉ. वासंती निचकवडे	207
40	कोविद १९ मध्ये कौटुंबिक हिंसाचाराशी असलेला मानसशास्त्रीयसंबंध	डॉ. अल्का संजय कोल्हे	212
41	कोरोना कालांतर्गत संगीत शिक्षण प्रणाली आणि सादरीकरणामध्ये तंत्रज्ञानाचे योगदान	वैखरी वझलवार	218
42	भारतापुढील बेरोजगारीची आव्हाने	प्रा.नंदकिशोक प्रेमचंद सिंगाडे	222
43	भारतातील युवा बेरोजगारी आणि कोविड–१९	प्रा. मिथुन गं. देशपांडे	227
44	'कौटूंबिक कलह किंवा हिंसाचार'	डॉ. अरूणा एस. धुल (देवगडे)	230
45	Covid – 19 : Impact of Health and Yoga	Dr. Sanghamitra Chauhan	236
46	कोव्हीड–१९ कोरोना लॉकडाऊन दरम्यानचा स्थलांतरितांचा प्रवास – एक अध्ययन	प्रा. डॉ. नंदा पांगुळ	241
47	बालक – महिला सक्षमीकरण आणि शिक्षण	डॉ. रेखा वडिखाये	248
48	महिला व बाल सक्षमीकरण	प्रा.विलास मेश्राम	254
49	स्थलांतर आणि बेरोजगारी	डॉ. निशा अशोक कळंबे	260
50	राष्ट्र विकासात शिक्षकांची भूमिका	प्रा.उज्वला स. नवले	266
51	कोविड १९ व मानसिक आरोग्य	प्रा. किरण चिकाटे	273
52	कोविड.१९ व शिक्षणात होणारे बदल	डॉ. जे. एस. हटवार	279
53	महिला सक्षमीकरण : एक आढावा (महाराष्ट्र शासनाच्या विविध योजना)	प्रा. अरुण आलेवार	285
54	कोविड १९ चा सामाजिक व`अर्थिक जीवनावर झालेला परिणाम	डॉ. लालचंद किसन रामटेके	292

RURAL WOMEN AND MEDIA

ग्रामीण महिला एवं मिडिया

डॉ. विजय शंकरराव दिघोरे
भिवापूर महाविद्यालय, भिवापूर
जिल्हा– नागपूर

प्रस्तावना :

मानव अपने विचारों को किसी न किसी रूप में व्यक्त करता है यही संचार का साधन है। आदिकाल से मानव अपने पहनावे, आवाज तथा अपनी शारीरिक भाषा से अपने विचारों को दूसरे तक पहुंचाता था। विकास के साथ ही बोली–भाषा का प्रचलन हुआ तथा धीरे–धीरे यह मिडिया के रूप में आज हमारे सामने आया है। इसमें समाचार पत्र, आकाशवाणी, दूरदर्शन, सेटेलाइट तथा आधुनिक संचार साधनों का हम उपयोग कर रहे हैं। प्राचीन काल में इसे केवल पुरूषों का काम माना जाता था, महिलाओं को इस कार्य में शामिल नहीं किया जाता था। शिक्षा में विकास तथा सब को शिक्षा प्राप्त होने के साथ ही शहरों में रहने वाले महिलाओं को परिवार तथा समाज के लोग सशर्त मिडिया से संबंधित कार्य की छूट दी गयी थी।

संचार तथा मिडिया की दृष्टिकोण से भारत आज भी विकसित देशों की तुलना में पिछड़ा हुआ है। इसका प्रमुख कारण यहां महिलाओं विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को इस संबंध में अल्प आजादी प्राप्त था, परन्तु संचार के नये टेक्नोलॉजी का विकास, टेलीफोन, कम्प्यूटर, इन्टरनेट तथा वर्तमान में मोवाइल के उपयोग ने उन्हें भी इस क्षेत्र में आने का अवसर दिया है। ग्रामीण एवं शहरी दोनों ही क्षेत्रों में इसका उपयोग अपनी आवश्यकता को सुविधाजनक बनाने तथा देश–दुनिया की जानकारी के लिये कर रहीं हैं। ग्रामीण महिलाओं को मिडिया के माध्यम से अपनी समस्या का समाधान, सरकारी योजनओं की जानकारी तथा एक दूसरे से संपर्क का अच्छा साधन बन गया है जिससे उनके पारिवारिक जीवन स्तर निःसंदेह विकसित हुआ है।

संचार एवं पत्रकारिता का इतिहास :

संसार के प्रथम महिला पत्रकार होने का श्रेय संयुक्त राज्य अमेरिका के एनी न्यूपोर्ट रॉयल को जाता है, इन्होंने 3 दिसंबर 1831 को पॉल प्राई नामक साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशन किया। इस काल में महिलाओं को संचार एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में कोई विशेष महत्व नहीं दिया जाता था, इसमें केवल पुरूष ही अपना एकाधिकार समझते थे।

भारत में महिला लेखन का प्रारंभ 6वीं शताब्दी ईसा–पूर्व से हो गया था। इतिहास में इसका प्रथम उल्लेख बौद्ध भिक्षुणियों की उन रचनाओं से प्राप्त होता है जिन्हें गौतम बुद्ध ने कठोर नियमों के साथ अपने मठ में शामिल किया था। इस प्रकार भारत में महिला लेखन की एक दीर्घ और समृद्ध प्रथा पूर्व से ही विद्यमान है। ऐतिहासिक दस्तावेजों में भारतीय लेखिका का पहली बार उल्लेख बौद्ध भिक्षुणियों के रूप में प्राप्त होता है, जो बौद्ध–संघ में शान्ति और मुक्ति की तलाश में आयी थीं, किन्तु आरंभ में महात्मा बुद्ध उन्हें अपने संघ में शामिल करने के इच्छुक नहीं थे, पर कालांतर में, वे इस पर सहमत हो गये और उन्होंने उन पर कठोर शर्त लगा दी। इस तरह से देखे तो संचार तथा पत्रकारिता का अधिकार महिलाओं को पश्चिमी देशों और भारत में प्राचीन काल से ही दिया गया था, परन्तु वर्तमान समय में महिलाओं में संचार के साधन तथा कामकाजी होने के कारण इसमें व्यापक परिवर्तन आया है। संचारक्रांति 1997 के आने से महिलाओं में विशेष जागरूकता बढ़ी है और वे अब संचार के आधुनिकतम साधनों का प्रयोग कर रहें है।

ISBN: 978-81-946103-6-6

ग्रामीण महिला जन संचार की भूमिका :

आज ग्रामीण समाज में जनसंचार की भूमिका सकारात्मक है। इसके साथ ही महिलाओं को इस बात की स्वतंत्रता दी गयी है कि वे अपने सुविधा के अनुसार संचार के विभिन्न साधनों का उपयोग कर सकते हैं। संचार माध्यम केवल समाचार ही नहीं जीवन के विविध पहलुओं और समस्याओं से संबंधित कई प्रकार की सूचनाएं भी आदान–प्रदान करती है। इन्हीं से सांस्कृतिक कार्यक्रम और मनोरंजन भी होती है। जन संचार करने वाली ग्रामीण महिलाओं को संचार माध्यमों के अंतर्गत अनेक कर्तव्य निभाने पड़ते हैं, इससे ही सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा मिलती है, ग्रामीण विकास का वातावरण तैयार होता है और दृष्टिकोण तथा पारंपरिक रीति–रिवाजों में परिवर्तन तथा प्रभावित होना प्रारंभ हो जाता है।

संचार माध्यमों से ग्रामीण विकास से जुड़े बहुत सी सरकारी योजनाओं की जानकारी महिलाओं को आसानी से दिया जा सकता है जैसे– स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, शिक्षा एवं रोजगार की जानकारी, समाज कल्याण, ग्राम सेवा, स्वरोजगार, ग्रामीण क्षेत्रों के विकास से संबंधित सरकारी उपक्रमों में महिलाओं की भागीदारी, आदि प्रमुख होते है। ग्रामीण महिलाओं के द्वारा संचार माध्यमों में सबसे पहले इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का उपयोग होना होता है। इसकी उपयोग से गांव भी शहरीकरण की ओर आगे बढ़ रहे हैं। आज इलेक्ट्रॉनिक उपकरण ग्रामीण महिलाओं के लिये सुविधा का साधन साबित हो रहा है। ग्रामीण महिलाओं में जन संचार माध्यम बहुत परिष्कृत और शक्तिशाली होते जा रहे हैं, फिर भी लोगों के विचार में व्यापक परिवर्तन नहीं आया है इसका प्रमुख कारण ग्रामीण आर्थिक सम्पन्नता है, जो जीवन स्तर को प्रदर्शित करता है।

संचार विकास का साधन है :

ग्रामीण महिलस विकास के लिये मिडिया एवं जन संचार विशेष भूमिका निभा सकता है। अतः ग्रामीण विकास में महिलाओं के योगदान हेतु उचित वातावरण बना सकता है। सारे विकासशील देशों में ग्रामीण समाज की स्थिति लगभग एक सी है, उससे निकलना होगा तभी समग्र विकास संभव हो पायेगा। जन संचार माध्यमों के विकास के लिये यह अनिवार्य शर्त है कि उन्हें आर्थिक एवं सामाजिक विकास के कार्यों सक्रिय साधन के रूप में मिडियों को आधार बनाकर जुटाना होगा तथा उनका सहयोग सौंपे गये कार्य के अनुरूप हो इसके लिये सतत् निरीक्षण किया जाना होगा। जन संचार तथा ग्रामीण महिलाओं की कार्य उपयोगिता के आधार पर ही सामाजिक परिवर्तन को सुगम बनाया जा सकता है तथा राष्ट्र समृद्ध और खुशहाल हो सकेगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि आधुनिक संचार साधन तथा मिडिया ग्रामीण विकास विशेषकर ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में एक नई उम्मीद की किरण जगाई है इसके लिये केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारें व्यवस्थित अर्थव्यवस्था विकसित कर रही है, ताकि किसी भी क्षेत्र तथा परिस्थितियों में असंतोष न हो सके। आज प्राथमिकताओं के आधार पर महिलाओं की सहायकता की आवश्यकता लगभग प्रत्येक क्षेत्र में संचार साधनों के विकास एवं उनके सतत् उपयोगिता के कारण ही है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में मिडिया की भूमिका एवं ग्रामीण महिला :

आज भी ग्रामीण महिलाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अभाव पाया जाता है। चूंकि ग्रामीण महिलाएं स्वयं ही अपने स्वास्थ्य के संबंध में जानकारी नहीं होती इसलिये बैगा, गांवों में ही अपना इलाज कराते रहते थे, परन्तु आज मिडिया के कारण उनमें इतनी तो जागरूकता जरूर आयी है कि अपना इलाज कराने के लिये स्वास्थ्य केन्द्रों में जाते है वहां अनेक प्रकार के बीमारियों के बारे में बताया तो जाता ही है साथ ही इसकी सुरक्षा के उपाय भी सुझाये जाते है। बच्चों के टीके, खानपान, गर्भवती महिलाओं को विशेष सावधानियां आदि बारे में विस्तार से बताया जाता है। आकाशवाणी, दूरदर्शन पर इस कार्यक्रम का प्रसारण होता है, और अब मोबाइल पर भी इसकी जानकारी सहज उपलब्ध है। अतः देखा जाये तो मिडिया

ISBN: 978-81-946103-6-6

के कारण ग्रमीण महिलाओं में अपने तथा परिवार के स्वास्थ्य के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त हो रही है।

महिला जागरूकता एवं ग्रामीण समाज :

आज प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की हिस्सेदारी में वृद्धि हो रही है। शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के साथ ही साथ अपने आसपास के वातावरण को सुरक्षित तथा संरक्षित करने का कार्य भी आज महिलाएं कर रही है। महिलाओं की जागरूकता के कारण ही समाज का सम्मिलित विकास संभव हो पाया है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी आज मिलकर कार्य करने की परम्परा विकसित हो रही है जिससे ग्रामिण महिलाएं अपने गांवों के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा पाने में सक्षम हो रही है।

ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना एवं टेक्नोलॉजी का बढ़ता प्रभाव :

सूचना एवं टेक्नोलॉजी 21वीं शताब्दी का सबसे प्रभावकारी तंत्र है जिसने पूरी दुनिया में बदलाव के नये युग का सूत्रपात किया है। यह प्रत्येक भारतीयों के लिये गर्व की बात है कि भारत सूचना एवं टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में व्यापक प्रगति की है। इस टेक्नोजॉली में प्रशिक्षित भारतीय विदेशों में बड़े–बड़े कार्य कर रहे हैं। इसमें प्रशासन, बैंकिंग, व्यापार, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, समाजिक चेतना एवं समरसता आदि क्षेत्रों में उपयोगी तथा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। टेक्नोलॉजी से केवल शहरी क्षेत्र ही नहीं बल्कि गांवों के विकास में भी मदद प्राप्त हो रही है जैसे कि कृषि भूमि के जोत का आकार, नक्शा, कृषकों के नाम तथा पहचान आसान हो गया है। इसके साथ ही सूचना टेक्नोलॉजी का लाभ ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं को भी प्राप्त हो रहा है।

गांवों के विकास में मिडिया का योगदान :

ग्रामीण विकास की सोच एवं दृष्टि तथा जनकल्याण योजनाओं की आनकारी लोगों तक पहुचाने में जनसंचार माध्यम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और आज भी अपनी जिम्मेदारी पूरी कर रहा है। आकाशवाणी ने कृषि तथा ग्रामीण विकास की दिशा में सकारात्मक योगदान दिया है। कम्प्यूटर के द्वारा गांवों के उत्थान को बढ़ावा देने वाली सूचनाओं का प्रसारण–प्रकाशन किया जा रहा है। ग्रामीण कार्यक्रमों का लाभ उठाने के लिये आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के विभिन्न कार्यक्रम में दिये गये सुझावों के कारण उन्हें आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहें हैं। मिडिया एवं संचार साधनों के लगातार उपयोग तथा इसका घरों–घर पहुंच ही विकास का मुख्य आधार बनता जा रहा है।

आधुनिक संचार साधनों के उपयोग ही आज विकास का आधार माना जा रहा है। इसके लिये ग्रामीण एवं शहरी महिलाएं मोबाइल, इन्टरनेट आदि का प्रयोग कर रहीं हैं। इसके साथ ही वे देश–दुनिया के खबरों से परिचित हो रहीं हैं यह केवल तभी संभव हो पाया है जब महिलाएं आर्थिक रूप से सम्पन्न हो, शिक्षा का पर्याप्त विकास हो तथा कार्य करने की आजादी प्राप्त हो। यही कारण है कि आज महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रही हैं। इसके साथ ही वे अपने परिवार तथा देश को विकसित करने में अपनी महती भूमिका निभा रही है।

शिक्षा में महिलाओं एवं लड़कियों की स्थिति :

लड़कियों की शिक्षा में सुधार होना इस बात का संकेत है कि भविष्य में परिवार की स्थिति सुदृण होगी तभी यह कहावत चरितार्थ होगी कि *'लड़की पढ़ेगी तभी परिवार गढ़ेगी'*। लड़कियों की शैक्षणिक स्थिति में सुधार के लिये सरकार निरंतर प्रयास कर रही है। इसके लिये प्रत्येक गांव में प्राथमिक स्कूल तथा गांवों के समूह में हाईस्कूल हायर सेकेण्डरी स्कूल की स्थापना की गयी है ताकि पढ़ने के लिये अधिक दूरी का सफर न करना पड़े। विद्यालयों में संचार के आधुनिक संसाधनों की सहायता एवं नये तकनीकी

ISBN: 978-81-946103-6-6

उपकरण से शिक्षा की व्यवस्था की जा रही है। शिक्षा तथा विज्ञान की दृष्टि से लड़कियों की स्थिति में पहले की तुलना में व्यापक परिवर्तन आया है। वह दिन दूर नहीं जब महिलायें आत्मनिर्भर होकर अपने परिवार के पालन–पोषण करने में सक्षम हो सकेगी।

ग्रामीण विकास में संचार माध्यमों की उपयोगिता :

ग्रामीण जीवन में वहां के लोगों का मुख्य आय के स्रोत कृषि है, हांलाकि कृषि पर निर्भरता में लगातार कमी आयी है क्योंकि वर्तमान में उद्योग जगत का महत्व बढ़ रहा है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि ग्रामीण कामगार अधिकांश समय खाली रहते हैं तथा कार्य की तलाश में शहरों की ओर पलायन पर जोर देते है। इससे निपटने के लिये ग्रामीण क्षेत्र तथा सुदूर जंगलों में संचार माध्यमों की सहायता से वहां के लोगों को जागरूक करने, मनोरंजन के साधन के रूप में उपयोग किया जा रहा है। साथ ही साथ संचार माध्यमों से उनकी शिक्षा तथा स्वास्थ्य संबंधी जानकारी भी प्रदान की जा रही है। किसान साथियों के लिये समय–समय पर खेती से संबंधित जानकारी, पशु से संबंधित जानकारी, मौसम की जानकारी प्रदान की जा रही है ताकि ग्रामीण विकास में इन सभी का सम्मलित रूप से योगदान प्राप्त होता रहे।

संचार के विभिन्न साधनों का अपना विशेष महत्व होता है। यदि सही संचार माध्यम का सही तरीके एवं ईमानदारी से अपने लक्ष्यों तथा कर्तव्यों का पालन करे तो वह दिन दूर नहीं कि जब ग्रामीण विकास की योजनाओं एवं कार्यक्रमों की पृष्ठभूमि ग्रामीण जनता के द्वारा निर्धारित की जायेगी। सरकार द्वारा चलाये जा रहे ग्रामीण विकास के विभिन्न कार्यक्रमों की सफलता के लिये योजनाओं को प्रारंभ करने के साथ ही इसकी सूचना एवं जानकारी ग्रामीण केन्द्रों तक भेजने की उचित व्यवस्था होनी चाहिये ताकि ये सही समय और सही तरीके से सफल हो सके।

पलायन रोकने में मिडिया की भूमिका :

ग्रामीणों का शहरों की ओर पलायन रोकने के लिये सरकार ने रोजगार तथा ग्रामीण महिला स्वरोजगार की योजना तथा साधन विकसित किये हैं तथा इसके साथ ही परंपरागत कामधंधे को व्यावसायिक गतिविधियों में परिवर्तित किया गया है। इस कार्य को पूर्ण करने के लिये संचार एवं मिडिया का अधिकाधिक उपयोग किया जा रहा है। ग्रामीण एवं शहरों के अंतराल को पाटने के लिये, ग्रामीण जनता को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिये, आर्थिक एवं सामाजिक आधार पर सुदृण करना आवश्यक है। इसके लिये ग्रामीण क्षेत्रों को आधुनिक संचार साधनों के साथ जोड़ा जा रहा है, इन्टरनेट, दूरदर्शन, आकाशवाणी, मोबाइल आदि के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को शिक्षित किया जा रहा है ताकि वे अपने ही गांव में रहकर गांवों के विकास में अपनी महती भूमिका निभाते रहें।

उपसंहार :

प्राचीनकाल से महिलाओं को संचार संबंधी अधिकार प्रदान किया गया है, ग्रामीण विकास में महिलाओं के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता। ग्रामीण महिलाएं अपनी वास्तविक स्थितियों से परिचित होती हैं, इसलिये वे समाज में बदलाव लाने का विचार व्यक्त करती है जो मिडिया के माध्यम से पूरा होता है। मिडिया के माध्यम से आज विकासित शहरों में महिलाएं अपनी योग्यता को दर्शा रहीं हैं, इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों की आवश्यकता की भी पूरा कर रही है। आधुनिक संचार साधन से ग्रामीण महिलाओं की सोच में व्यापक परिवर्तन आया है, वे विज्ञान, रक्षा सेवा, प्रबंध तथा विभिन्न कार्यों में अग्रणी कार्य कर रहीं हैं जिसका प्रत्यक्ष लाभ भारत तथा अन्य विकसित देशों को प्राप्त हो रहा है।

ISBN: 978-81-946103-6-6

संदर्भ स्रोत :

01. नए जन संचार माध्यम और हिन्दी, सम्पादक, पचौरी सुधीश एवं शर्मा अचला, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय आवृत्ति संस्करण 2011.

02. आधुनिक समाचार पत्र प्रबंधन, पुरोहित अनिल किशोर, आदित्य पब्लिशर्स, बीना मध्यप्रदेश, संस्करण 1998.

03. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता, डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम छात्र संस्करण 2008.

04. संचार और फोटो पत्रकारिता, डॉ. मेहरा रमेश, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008.

05. आधुनिक पत्रकारिता की रूपरेखा, डॉ. रजवार इन्द्र चन्द, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005.

06. जन संचार, चटर्जी रामकृष्ण, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली, 1976.

07. पत्रकारिता : परिवेश और प्रवृत्तियां, डॉ. पाण्डेय पृथ्वीनाथ, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण 2004.

08. योजना मासिक पत्रिका, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली.

09. कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली.

10. परीक्षा मंथन अतिरिक्तांक, मंथन प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2016.

11. बिज़नेस स्टैंडर्ड, दैनिक समाचार, रायपुर संस्करण छ.ग.

ISBN: 978-81-946103-6-6